स्वास्थ्य संगवारी

मेहनतकशों के स्वास्थ्य के लिए
मेहनतकशों का अपना कार्यक्रम
सहयोग राशि रू.6.00 मात्र
मोबा. : 07748-216088
E_mail : shaheedhospital@gmail.com

हमारा सफर

3 मार्च 1977 में छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ का गठन हुआ, दल्ली राजहरा खदान में काम करते हुए ठेकेदारी मजदूरों ने अपना-अपना संगठन छोड़के छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ बनाये। शहीद शंकर गुहा नियोगी के नेतृत्व में मजदूरों ने अलग-अलग विभाग बनाकर काम शुरू किया । स्वास्थ्य के लिए संघर्ष करो नारा के साथ, मेहनतकशों के स्वास्थ्य के बारे में काम करने का निश्चय किया। कामरेड कुसुमबाई के मृत्यु से विचलित होते हुए मजदूरों ने एक प्रसुति भवन बनाने का निर्णय लियाा। 5-9-1980 को शिलान्यास भी किया, शुरू में शहीद प्रसुति भवन का नाम रखा गया बाद में शहीद अस्पताल हुआ। मजदूरों ने 109 मजदूरों का एक स्वास्थ्य कमेटी बनाया और 15 अगस्त 1982 में शहीद अस्पताल डिस्पेंशरी का शुरूवात हुआ। मजदूरों ने एक संगठन बनाया और 2 हजार रुपए का सामान और दवाई खरीद कर युनियन ऑफिस के गैरेज में डिस्पेंशरी चालू किए। शुरुआत में छत्तीसगढ़ में विशेष कर इस क्षेत्र में स्वास्थ्य के बारे में चर्चा हुआ और कुछ समस्या के बारे में ज्यादा ध्यान देने का निर्णय लिया जैसे जचकी में दर्द बढ़ाने की सुई नहीं लगाना, टट्टी उल्टी, कुपोषण इन्जेक्शन के ऊपर ज्यादा भरोसा कुछ पोस्टर भी बनाया गया। जचकी में दर्द बढ़ाने वाली सुई के खिलाफ पाम्पलेट निकाला गया। मजदूर के बीच में और मोहगे आसपास के गांव के बीच में पोस्टर प्रदर्शनी तथा स्वास्थ्य के बारे में अपना समझ को बढ़ाने के लिए रोज चर्चा होते रहे। कुछ मजदूर साथी स्वास्थ्य कार्यक्रम में ज्यादा रुची दिखाए और स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रुप में अपना समय डिस्पेंशरी में देने लगे। 3 जून 1983 को अपना डिस्पेंशरी बंद करके हम लोग अपना अस्पताल का शुरुआत किए। मजदूरों ने 10 हजार रुपए का इंस्ट्रुमेंट खरीद कर दिए और अस्पताल चलाने के लिए अपना भत्ता से एक ट्रक खरीद करके दिए। शुरु से अस्पताल प्रसुति के बारे में ज्यादा ध्यान देते रहा है। डिस्पेंशरी में एक डिलीवरी भी हुआ था व्यवस्था न होते हुए भी डिस्पेंशरी में प्रसुति की व्यवस्था की गई,

स्व. कुसुमबाई का जीवन परिचय

आपका जन्म सन् 1949 में ग्राम पाररास (बालोद) निवासी श्री उमेन्दीराम साहू के यहाँ हुआ । आपके परिवार में दो बहन और एक भाई हैं । आपका विवाह ग्राम धनोरा निवासी श्री भावीखनराम साहू के साथ सन् 1966 में हुआ । 10 अक्टूबर 1967 को एक पुत्र की प्राप्ति हुई । आपका बहुत गरीबी में जीवन यापन हुआ । आपने अपने जीवन यापन के लिए सन् 1970 में दल्ली राजहरा आये । यहाँ आप दल्ली राजहरा लौह खान समूह में एक मजदूर के रूप में कार्य किया। जहाँ ठेकेदारों के खिलाफ मजदूर आन्दोलन में मजदूर साथियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नेतृत्व सम्हाला । सन् 1977 में आपको द्वितीय संतान के प्राप्ति के दौरान इलाज के अभाव में डिलवरी के दौरान आपकी मृत्यु हो गयी । सी.एम.एस.एस. की जुझारू उपाध्यक्षा कामरेड कुसुम बाई को दिसम्बर 1977 में द्वितीय गर्भावस्था के प्रसव पीड़ा के दौरान भिलाई स्टील प्लांट के दल्ली राजहरा स्थित अस्पताल में जाया गया पर वहाँ सिर्फ बी.एस.पी. कर्मचारी लोगों का ही इलाज होता था, इसलिए कामरेड कुसुम बाई को भिलाई सेक्टर 9 के अस्पताल में ले जाने की सलाह दी गई । इसी दौरान उनकी मृत्यु हो गई, इस घटना से आक्रोसित मजदूरों ने अपना एक प्रसुति भवन निर्माण की सोची, जो बाद में शहीद अस्पताल का रूप लिया, मजदूरों का सपना साकार हुआ।

1983 से 2017 तक शहीद अस्पताल का डिलवरी रिपोर्ट

अस्पताल में आने के बाद प्रसव को सुरक्षित करने के लिए धीरे-धीरे व्यवस्था बनाया गया। तब हमारे सिस्टर्स के पास डिलीवरी के बारे में अनुभव कम था इसलिए साधारण डिलीवरी ही होता था। ऑपरेशन का व्यवस्था नहीं था। ऑपरेशन का जरुरत पड़ने से डॉ. मथाई के पास भेजा जाता था। लेकिन धीरे-धीरे ऑपरेशन का व्यवस्था भी हुआ और हम लोग सभी तरह से प्रसव कराने के लिए सक्षम हो गए। शुरुआत में डॉक्टर द्वारा ही एएनसी चेकअप और डिलीवरी भी डॉक्टर द्वारा किया जाता था। धीरे-धीरे सिस्टर्स ने डिलीवरी कराना नवजात शिशु का देखरेख करना और एएनसी चेकअप भी करना सीखने के बाद प्रसुति विभाग एक अलग विभाग के रुप में तैयार हो गया। आज अस्पताल के सिस्टरों के द्वारा एएनसी से शुरु करके डिलीवरी कराने की जिम्मेदारी अपने पर लिया। करीब 40 प्रसुति माँ एएनसी चेकअप के लिए रोज आते हैं। लगभग 10 महिलाएं डिलीवरी के लिए अस्पताल में आते है और हम कोशिश करते है कि हम सुरक्षित प्रसव कराए।

अनुभव :-

- 35 साल शहीद अस्पताल में प्रसुति कराने एवं गर्भवती माताओं की देखभाल करते समय हमारा अनुभव हुआ कि माताओं के स्वास्थ्य में कुछ जटिलताऐं आती है।
- गर्भवती महिला में खून की कमी।
- गर्भवती महिला के पोषण पर ध्यान नहीं दिया जाता है।
- गर्भवती महिला का जाँच ठीक से न होने के कारण बी पी बढ़ने से झटका होता है।
- समय पर डिलीवरी के लिए अस्पताल न पहुंच पाने के कारण माँ तथा नवजात को खतरा होता है।

लक्ष्य :- हम चाहते है कि इस क्षेत्र में गर्भवती महिला की अच्छे से जांच हो और सुरक्षित डिलीवरी हो यही हमारा लक्ष्य है।

नियोगी जी के कलम से....

छत्तीसगढ़ माइंस श्रमिक संघ युनियन दफ्तर के सामने हजारों मजदूर रो रहे थे एक महिला चिल्ला-चिल्ला कर रोते रोते बोल रही थी दल्ली के माटी के जठना माटी ओढ़ना, माटी ओढ़ के सुतगे, हजारों मजदूरों के अगवा।

लाल हरा झंडा ओढ़ के एक महिला चीर निंद्रा में सोई हुई थी अपनी माता को मृत्यु शैय्या में सोई देख 10 वर्षीय बालक रोते रोते बेहोश होकर शव के चरणों में गिर पड़ा। कामरेड कुसुम बाई का वह इकलौता पुत्र था। मैंने आखिरी बार कामरेट कुसुमबाई को उनकी झोपड़ी में देखा था, जब 57 ऐतिहासिक हड़ताली दिन आखिरी दौर से गुजर रहे थे। सी.एम.एस.एस. की हड़ताल लम्बी होती जा रही थी। मैनेजमेंट उड़ीसा से लोहा-पत्थर लाकर भिलाई कारखाना चला रहा था, परंतु मजदूरों की जायज मांग को पूरा करके हड़ताल समाप्त करने की इच्छा नहीं थी। सी.एम.एस.एस. के पदाधिकारियों की एक आवश्यक बैठक कामरेड कुसुमबाई के घर पर ही बुलाई गयी थी। बैठक के बीच में कामरेड कुसुमबाई दूसरे साथियों के लिए बिना दूध की चाय बनाकर लाई और सबको चाय बाँटते-बाँटते बोली नहीं, अब नहीं, शांति-शांति बोलकर अब तुम लोग बात का लम्बा मत खींचों। मजदूरों के पेट में आग जल रही है। शांति तो सेठों के घर में है। भूखे पेट में शांति कहाँ? छत्तीसगढ़ बंद का फैसला उचित है। रेल, मोटर, बस, दुकान, ऑफिस सब बंद कर दिया जाएगा। वैसे ही हम मर रहे हैं, अब लड़ते-लड़ते मैदान में मरेंगे, वही अच्छा रहेगा। मीटिंग में राजहरा, बालोद और हिर्री बंद का फैसला हुआ। बंद पर कामयाबी पाने के लिए सौ-सौ आदमियों के जत्थे बनाने का निश्चय किया गया। जत्थे-वाहिनी की जिम्मेदारी कामरेड कुसुमबाई पर सौंपी गई। उस दिन मुझे जिला कलेक्टर श्री रमेश दास ने बुलाया था, तो मुझे तुरंत दुर्ग जाना था। कामरेड कुसुमबाई मेरे लिए बीस मिनट में खाना पकाकर ले आई। दूसरे साथियों ने मजाक में कहा, कामरेड शंकर गुहा नियोगी की ही इतनी खातिरदारी कर रही हो, हमें भी खाना दो। इस पर कुसुमबाई बोली कामरेड शंकर गाँव जाही, तुमन तो घर में रहूं। एक दिन कुसुमबाई से मेरा छोटा झगड़ा हुआ। आमसभा में कामरेड कुसुमबाई को भाषण देने के लिए आह्वान किया गया पर कुसुमबाई अपनी जगह से उठ नहीं रही थी। मैं उसके पास गया और उसे डाँटा, काबर देरी करत हो, जाव न झटकुन। कामरेड कुसुम बोली हमीच-हमीच हा हर रोजकिन गोठियाथ। नवा मन ला घलो तो उठाय के कोशिश करे, सबो झन ला गोठियाय के मौका मिलना चाहिए। इस प्रकार नए कार्यकर्ताओं के लिए कुसुमबाई ज्यादा ध्यान रखती थी। एक दिन कुसुमबाई कामरेड अंजनी बाई को लेकर आई और बोली अंजनी ला संगठन के काम में लगावो। बाद में संघर्ष के दौरान अंजनी बाई जेल भी गई।

कामरेड कुसुमबाई को बड़ा अफसोस था कि उसको जेल जाने का मौका नहीं मिला। कामरेड दुर्गाबाई व अंजनीबाई जेल होकर आई थी। इसलिए एक दिन मजाक में कुसुमबाई से वे दोनों बोली देख हम मन तो तोर ले आगे बढ़गेन। तब कुसुमबाई जवाब में बोली तुमन मजदूर के संघर्ष में जेल गेहो, मेहर किसान के आंदोलन में जेल जाहूँ। वास्तव में किसानों के प्रति कुसुमबाई के हृदय में बहुत बड़ा स्थान था। गाँवों की मीटिंग में कुसुमबाई सबसे पहले पहुँच जाती थी। किसान-मजदूर मोर्चे की मीटिंग गुरुर में थी। कामरेड कुसुमबाई का भाषण उस दिन हमारे किसानों ने घंटों तक सुना। कुसुमबाई भाषण में बोली सेठ बनिया मन बपरा सरी गाँव-गाँव मा खुसरे हावे जम्मों जमीन ला कब्जा करे हे, हमन भूमिहीन बसुंदरा बनत जात हन, आवो संगवारी धरो लाठी बेड़गा, जो जमीन सेठ मन हथियाय हे ओला भूमिहीन और गरीब किसान मन ला बाँटबोन अधिकार हम ला कोई नी देय, अधिकार लड़े ले जाथे तब मिलथे। तालियों की गड़गड़ाहट के साथ किसानों ने कुसुमबाई के भाषण का स्वागत किया।

दानीटोला खदान के मजदूर साथी कुसुमबाई की याद में रो रहे थे। राजहरा की खदान में काम करने के पूर्व कुसुमबाई दानीटोला में पत्थर लोडिंग का कार्य करती थी। दानीटोला के साथी गणेश के अनुसार मार्च माह की हड़ताल के समय कुसुमबाई हमें समझाने के लिए दानीटोला आई थी। और बोली थी मजदूर-मजदूर भाई-भाई। राजहरा दानीटोला ला साथ दिही अउर दानीटोला राजहरा ला साथ दिही। मार्च 1977 की हड़ताल के दिनों में कुसुमबाई घर-द्वार त्याग कर चौबीसों घंटे विजय मैदान में डटी रहती थी।

ठेका मजदूरों के साथ जिस प्रकार अमानवीय व्यवहार होता है उसका कुसुमबाई जीवन भर प्रतिरोध करती रही। गोलीकांड के दिनों कर्फ्यु की रात में भी कुसुमबाई घूम-घूमकर मीटिंग करती थी। ठेकेदारी प्रथा समाप्त करने का उद्देश्य ही उसका अपना मूल कर्तव्य था।

माँ बनने का एहसास

माँ बनने का पता चलते ही मन में बहुत खुशी होती है, अपने अन्दर अलग प्रकार का बदलाव नजर आने लगता है। दूसरों से भी बहुत प्यार मिलता है, सब खुब ध्यान देने लगते हैं। छोटी-बड़ी सभी प्रकार के चीजों का ख्याल रखते हैं। ये खाना है, ये नहीं खाना है, ये करना है, ये नहीं करना है, खाने-पीने का खुब ध्यान रखते हैं। जैसे-जैसे डिलवरी का समय नजदीक आता है मन में खुशी आगे के लिए सोच बढ़ जाता है, आगे बच्चे के लिए ये करना है ऐसे रहना है।

डिलवरी के बाद अपने बच्चे को देख मन में अलग खुशी आ जाती है। शरीर में कितना बदलाव आ जाता है। मुझे पता नहीं था कि ऑपरेशन से डिलवरी होगा, मुझे लगता था कि मैं नार्मल हो जाऊँगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ लेकिन जो होता है अच्छे के लिए होता है। सारे लोग देखने के लिए आते हैं सबके चेहरे पर खुशी झलकती है। लेकिन हम लोगों की थोड़ी परेशानी बढ़ जाती है क्योंकि अचानक कहीं भी दर्द तो कभी ठीक लगता है। पल में ठीक हो जाता है। खाना-पीना सब देखकर खाना पड़ता है। बच्चे के बारे में सोच-सोचकर खाना है। पहले सब खाओ फिर सब खाने से पहले सोचो फिर खाओ।

जागे-जागे सोना बार-बार नींद खुल जाना कहीं बच्चा रो तो नहीं रहा है। पूरी तरह से स्वस्थ रहे उसे कुछ न हो जो होना है मुझे हो मेरा बच्चा अच्छा रहे उसे देखकर खशी मिलती है।

एक अलग और बहुत बढ़िया एहसास है।

श्रीमती प्यारी निषाद गांधी चौक,राजहरा

My Ideas for Pregancy

हमारी शादी 25/04/2016 को हुआ। हमें शादी के बाद बेबी की जरूरत नहीं थी क्योंकि हम दोनों एक दूसरे को समझना चाहते थे। एक साल इंतजार करने के बाद हम दोनों ने फैसला किया कि अब हमें बेबी लाना चाहिए। फिर इसकी शुरूवात हुई। 1 फरवरी 2017 को मेरा प्रेगनेन्सी दौर शुरू हुआ। जब मुझे मालूम हुआ कि मैं प्रेग्नेंट हूँ, मेरी खुशी का ठिकाना ना था। मानो मेरा दूसरा जन्म होने वाला हो, फिर माह बढ़ते गया, डिलवरी का समय पास आते गया। दिल से आवाज आनी थी कि माँ मैं आ रही हूँ। जब मैं सातवें माह में प्रवेश की तब मुझे उसकी पहली लात की Kick 'it awsome' उसके बाद जो Kick की बौछार हुई मानो खुशी रूकती ही नहीं थी।

उसके बाद मेरी डिलवरी समय पास आ गयी। 9 माह पूरा हुआ ऐसा महसूस होने लगता था, क्योंकि कब उसे देखूँ, उससे बात करूँ, उसके साथ खेलूँ। फिर एक समय ऐसा आया जब मेरी इच्छा पूरा होने जा रहा था, मैं बहुत करीब थी 9 माह खत्म हुआ। जब 10 माह का एक दिन प्रवेश हुआ मेरा दर्द हल्का शुरू हुआ जैसे मेरी माँ कहती थी कि किसी का 10 माह का छाँव लगता है और आ जाता है। मेरा दर्द बढ़ता गया। फिर मुझे अस्पताल लाया गया। फिर दिनभर रखने के बाद 2 नवम्बर 2017 के शाम 6.40 को मेरे हाथ में मेरा बच्ची जो मुझे एक बार फिर जन्म होने का एहसास दिया जो मेरे लिए बहुत लेंक है। मेरी अनुभव कुछ इस तरह का है। मैं अपने बच्ची का नाम रूची रखने वाली हूँ।

Keep Smile

श्रीमती रेणुका ठाकुर दल्ली राजहरा

मेरा नाम चन्द्रकला नेताम है, मेरे पति का नाम सुभाष नेताम है। हमारी शादी 28/04/2014 में हुआ। हमारी शादी दोनों परिवारों की रजामंदी से हुआ है। हमारी शादी से सब खुश हैं, और मैं अपने परिवार में खुशी से हूँ। हमारी शादी के 3 वर्ष बाद वो खुशी का पल आया जो हमारे जीवन को और खुशियों से भर दिया हमारा नन्हा सा बालक।

गर्भावस्था (नये जीवन की शुरुवात)

गर्भावस्था यानी एक नये जीवन की शुरुवात अपने आपको सुरक्षित रखे नवजात का सुन्दर स्वागत करें। गर्भावस्था में नियमित जाँच करावे। प्रथम तीन महिनों में कम से कम एक बार द्वितीय तीन महिनों में हर माह एक बार, सातवाँ महीना से नवाँ महीना तक प्रति दो सप्ताह में एक बार, नवाँ महीना से शीशु जन्म तक प्रति सप्ताह में एक बार गर्भवती महिला को कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- रात्रि को देर तक न जागें, सुबह देर तक न सोवे, दोपहर को थोड़ा विश्राम करें।
- सख्त पथरीले टेढ़े रास्तों पर न चलें, ऊँचे पर, लम्बी सीढ़ियाँ रेत के टीले पर चढ़ें।
- हमेशा करवट लेकर सोवे।
- कोई भी दवाई चिकित्सक (डॉक्टर) की सलाह के बिना न लें।
- लम्बे उपवास न करें, नशीले पदार्थ का सेवन न करें।
- गर्भावस्था में ज्यादा खाने की जरूरत होती है।

क्योंकि आपके शरीर में एक नया जीवन बढ़ रहा है। महिला के गर्भवती होने के बाद उसका सबसे मुश्किल दौर शुरू हो जाता है। माँ बनने का अहसास तो प्यारा होता है, लेकिन गर्भ के यह 9 महीने बहुत मुश्किल होते हैं जैसा कि सबको पता है कि गर्भधारण के बाद महिला को उल्टी आना शुरू हो जाता है, ऐसे देखा जाय तो यह गर्भधारण का भी संकेत माना जाता है तो हम आपको बताऐंगे कि गर्भधारण के बाद महिला को उल्टी क्यों आती है।

इसका सबसे जरूरी कारण गर्भधारण के बाद महिला के शरीर में हार्मोन बदलने लग जाते हैं। जिसकी वजह से महिला को उल्टी आती है। साथियों यह कोई गंभीर समस्या नहीं है। गर्भधारण के बाद उल्टियाँ आना साधारण सी बात है। कुछ महिलाओं में उल्टी आने की समस्या कुछ ज्यादा ही बढ़ जाती है तो उसके लिए हम आपको कुछ उपाय बता रहे हैं।

- थोड़ा-थोड़ा देर में थोड़ा-थोड़ा खाना खायें।
- नमक, शक्कर, नीबू का घोल बनाकर पिलायें।
- ज्यादा परेशानी होने से अस्पताल जाना है।

लोरी

छत्तीसगढ़ी में बच्चों को बहलाने या सुलाने के लिए गाये जाने वाले ये गीत प्रातः दादी माँ, बहन, माँ पड़ोसिन द्वारा गाये जाते हैं।

निंदिया तोला आवे रे, बाबू सुति जावे रे,
सुत जावे सुति जावे, बाबू सुति जावे रे,
झनि रोवे, झनि रोवे, बाबू झनि रोवे रे,
तोर दाई गेहे बाबू, बाबू झनि रोवे रे,
तोर दाई गेहे बाबू, भउहा बिने बर रे,
तोर ददा गेहे बाबू खेत कोड़े बर रे,
कोन तोला मारिन बाबू, कोन तोला पीटिन रे,
कोन तोला अंगुरी के बाबू, छड़याँ देखाइन रे,
चंदा ममा आवनि, दूध भात खावनि रे,
बाबू के मुह में गप ले, नोनी के मुह में गप ले।

मैं 19 अगस्त सन् 1983 को शहीद अस्पताल में ज्वाइनिंग की इसके एक दिन पहले मैं काम करूंगी करके पूछने के लिए आई थी तब डॉ. विनायक सेन और डॉ. जाना सर तथा डा. कुन्दू सर और डॉ. चंचला दीदी थी। उस समय सिर्फ 13 बिस्तर था जिसमें मेल फिमेल तथा बच्चे भर्ती होते थे। अभी जो नर्सरी है उसमें 2 बिस्तर था। हम लोगों का स्टाफ कम था और मरीज 15 बिस्तर में और बाहर खुद का खाट लाकर रहते थे। हमारे अस्पताल के सामने बैल-गाड़ी रहता था क्योंकि दूर-गांव से बैलगाडी या, कांवर में खाट डालकर लाते थे। उस समय मरीज को अस्पताल के अन्दर लाने के लिए बाहर में चले जाते थे। पहले कोई दवाई का स्टाक नहीं था जो भी दवाई बिकी होती थी दिन में उसी पैसा से अगले दिन सुबह दवाई लेकर आते थे। मुझे याद है फिमेल वार्ड की 4 नं. बिस्तर में धोबेदण्ड गांव का गिरधारी राम भर्ती था उनकी मां मुझे अपनी बेटी है करके बुलाती थी जब गिरधारी ठीक हो गया और घर जाने के समय मेरा हाथ पकड कर बोला दीदी मेरे घर जरूर आना करके मैं भी रो पड़ी उनका अपनापन देखकर। पहले हम लोगों को बहुत तकलीफ उठाना पड़ता था। किसी मरीज को अस्पताल आने में ज्यादा ही परेशानी होती थी तो हम लोग उसके घर चले जाते थे और इन्जेक्शन या दवाई देकर आते थे। डॉक्टर लोग भी हमारे साथ जाते थे, ताकि मरीज को देख सकें। हम लोग गांव का कार्यक्रम भी करते थे जिसमें उल्टी दस्त

हमारा अनुभव

बुखार और गर्भवती महिलाओं का चेकअप भी करते थे। उल्टी-दस्त नवम्बर-दिसम्बर के महिनों में बच्चों को बहुत ही होता था तो हम लोग बाहर में कुर्सी लगाकर सभी बच्चों को शरबत पिलाते थे। हमारा अस्पताल 9 बजे से 1 दोपहर तक और 4 बजे से 7:30 बजे तक खुलने का समय था, लेकिन दोपहर में घर जाने का समय ही नहीं मिलता था। हम लोग यहीं रहते थे और युनियन ऑफिस से दाल-चावल आता था उसी को खा लेते थे। हमारे स्वास्थ्यकर्मी भैया लोग पहाड़ी से घर न जाकर अस्पताल आ जाते थे और हम लोगों की मदद करते थे। जो भी रैली या जुलुस होता था उसमें भी हम लोग बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। हमारे अस्पताल में 13 बिस्तर जनरल मरीज के लिए था जो धीरे-धीरे बहुत ही बड़ा हो गया है। उस समय हम लोग 7-8 स्टाफ थे और अभी स्टाफ भी बहुत बढ़ गये हैं, लेकिन एक चीज नहीं बदली वो है मरीज, जो पहले भी बहुत आते थे और आज भी बहुत आते हैं।

कुलेश्वरी सोनवानी

मैं 1997 में बीमार बेटा के माँ के रूप में शहीद अस्पताल में पहली बार आई, मेरा बेटा बहुत बीमार था। बचने की उम्मीद बहुत कम था, शहीद अस्पताल में डॉ. राजीव लोचन शर्मा, डॉ. विक्रम राठिया, डॉ. विजय ठाकुर, स्टॉफ में सुजाता, कुलेश्वरी, रेखा, मंजू, सुलेखा, नंदिनी, लता, तोरण थे जिन्होंने बहुत मेहनत से मेरे बेटे को जीवनदान दिया। 1 महिना 3 दिन भर्ती था। उसका छुट्टी हुआ तो मेरा मन भी काम करने का इच्छा हुई और मैंने आवेदन दिया और मुझे स्टॉफ के रूप में चयन किया। यहाँ आने के बाद मुझे छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा युनियन 1977 के लड़ाई में शहीद नियोगी जी की शहादत, भिलाई रेल्वे लाईन में शहीद नियोगी जी के नेतृत्व में मजदूरों के द्वारा शहीद अस्पताल का निर्माण के बारे में जानकारी मिली, इसके अलावा एक नाम स्व. कुसुमबाई जिनके डिलवरी के दौरान उचित इलाज के अभाव में मृत्यु हो गयी जो कि एक खदान में काम करने वाली महिला मजदूर थी। उनकी मृत्यु से मजदूरों ने अस्पताल बनाने का निर्णय लिया, जिसमें मजदूरों ने अपना मजदूरी और श्रमदान दिया। हम उन सभी को धन्यवाद देना चाहते हैं जिनके मन में यह विचार आया। स्व. कुसुमबाई शहीद अस्पताल के लिए एक प्रेरणा है और दीपक है जिसके उजाले में शहीद अस्पताल परिवार काम कर रहे हैं। शहीद अस्पताल के इतिहास में हमेशा स्व. कुसुमबाई का नाम सुनहरी अक्षरों में लिखा जायेगा।

श्रीमती कुमारी करियारे

एक बच्चा के बाद - दूसरा बच्चा दो ढाई साल के बाद होना चाहिए।

गर्भ निरोधक के लिए आप-

- गर्भ निरोधक गोली या
- कॉपर टी अपना सकते हैं।

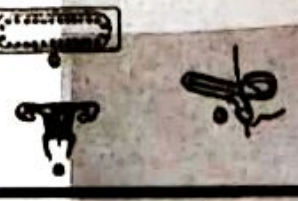

मेरा अनुभव

सन् 1990 में मैं अपने बाबूजी के साथ परिवार सहित जुलूस होता तो मैं वहाँ भी जाती थी। मेरे बाबूजी ने यही शंकर गुहा नियोगी जी हैं करके बताते थे। कभी–कभी उनका भाषण सुनती थी तो उन्होने मजदूरों के हित में रोजी–रोटी की समस्या के साथ–साथ मजदूरों के बच्चे की स्वास्थ्य एवं बच्चों की पढ़ाई के बारे में बताते थे ।

इस समय मजदूरों की आर्थिक हालत बहुत खराब थी। बीमार पड़ने से ठेकेदार ठीक से इलाज नहीं करवाते थे। बी. एस. पी. अस्पताल में डॉक्टर मजदूरों को घृणा से देखते थे। मजदूर परिवार लोगों का इलाज नहीं होता था। यही मुख्य कारण होगा कि स्व. कुसुमबाई का इलाज गर्भावस्था में ठीक से नहीं हुआ होगा और उनकी मृत्यु हो गई।

नियोगी जी की सोच एवं मजदूरों की सोच से डिलवरी वार्ड बनाने का निर्णय हुआ और यही शहीद हुए मजदूरों के नाम से शहीद अस्पताल मजदूरों ने बनाया।

उस समय सिर्फ मजदूर एवं उनके परिवारों का इलाज होता था। क्योंकि बाहरी लोग नहीं आते थे। आते थे लेकिन बहुत कम लोग आते थे क्योंकि कुछ लोग दल्ली एवं आसपास के लोगों के साथ यह प्रचार करते थे कि शहीद अस्पताल जावोगे तो शहीद हो जावोगे। यह प्रचार कुछ दिनो तक चलता रहा और लोग समझने लगे कि सस्ता और अच्छा इलाज यहाँ होता है। टट्टी–उल्टी में शरबत–पसिया पिलाना, जचकी में दर्द बढ़ाने का सुई न लगाना, डिलवरी मरीज को भरपेट खाना खिलाना है, स्वास्थ्य शिक्षा में अलग–अलग रोगों पर सीधी–सादी भाषा में जानकारी देना शुरू हुआ।

आज की अपेक्षा पहले मशीन एवं अन्य टूल्स कम था। उसके बावजूद मरीजों की संख्या कम नहीं हुआ। उस समय स्वास्थ्य कार्यकर्ता लोग आकर सेवा देते थे और हम लोगों को भी सिखाते थे।

अभी हमारे यहाँ बहुत सारे जाँच कराने की सुविधा है। ओ.पी.डी. में मरीजों की संख्या बहुत रहती है। उसमें गर्भवती महिलाएँ भी रहती है। हम सिस्टर लोग ANC से शुरू करके डिलवरी कराने का जिम्मेदारी लेते हैं। रोज ANC चेकअप के लिए 35–40 गर्भवती महिलाएँ और 8–10 महिलाएँ डिलवरी के लिए आते हैं। हम कोशिश करते हैं कि सुरक्षित प्रसव करायें। जिसमें माँ और नवजात शिशु सुरक्षित हो।

अनुभव :- 1. गर्भवती महिलाओं का समय–समय पर चेकअप नहीं कराने से समस्या और बढ़ जाती है।

2. गर्भावस्था के दौरान खून की कमी, हाथ–पैर में सूजन, पेशाबमें एल्बुमिन खतरनाक हो सकते हैं।

3. गर्भावस्था में ब्लड प्रेसर बढ़ने से सही समय में अस्पताल नहीं पहुँचने पर झटका आने लगता है और माँ एवं बच्चा को जान का खतरा रहता है।

लक्ष्य :- 1. माँ व बच्चे की सुरक्षा हमारी पहली प्राथमिकता होगी।

2. गर्भावस्था एवं प्रसव के बारे में नई–नई सूचनाएँ व जानकारी लोगों तक पहुँचाना है।

3. हम चाहते हैं कि गर्भवती महिलाओं का जाँच अच्छा हो और आने वाले समय में सुरक्षित प्रसव हमारा लक्ष्य होगा।

श्रीमती हेमलता देशमुख

नवनिर्मित
कुसुम बाई प्रसुति भवन

सास - बहू के गोठ-बात

सास : बहू(लता) अभी तक ले उठे नईहस ओ, चल न उठ चाय पानी ल बना ।

लता (बहू) : दाई, मोला कइसे तो लागत हे बने नई लागत हे ।

सास : का होगे, तेंहे कैसे लागत हे ओ....

लता (बहू) : दाई मोला उल्टी होवत हे अउ चक्कर घलो लागत हे ।

सास : तोर महिना आय हे ते नई आहे ओ कब आय रिहिस ।

लता (बहू) : पिछले महिना के 10 तारीख के आय रिहिस हे, ये महिना अभी नई आय हे ।

सास : कहाँ हे रामु हा, अरे रामु कहाँ हस रे, जा तो बहु ल स्वास्थ्य केन्द्र लेग, जाँच कराके ला तो ।

लता (बहू) : दाई हमन अस्पताल ले पेशाब जाँच करीस अउ बताईस कि पेट में बच्चा हे। मोला गर्भवती हस कहिके बताइस हे। पहली बच्चा के समय गर्भवती माता के सिरदर्द, उल्टी, चक्कर और पेट में दर्द होथे। ये सब चिंता करे के बात नई हे । ये सब चिन्ता करे के बात नई हे । हर महिना जाँच करवाना हे ।

सास : हमर पाहरो म ये सब नई रहाय । हमूमन तो माँ बने हावन, तुम्हर मन के काम करे के ढोंग हरे ।

बहू : हव दाई, फेर तहूँ हर 6 ठन लइका होय रेहेस का, तेमा 4 ठन बाचे हे न दाई । पहली इलाज अउ अस्पताल म जचकी (डिलवरी) होय ले बच जातिस दाई ।

गर्भावस्था म खून के कमी होथे अउ कई प्रकार के समस्या (बीमारी) होथे । समय-समय म इलाज और आयरन के गोली अउ टिटनस के सुई लगवाय ले माँ अउ बच्चा स्वस्थ रथे दाई ।

सम्पादक- दीपलक्ष्मी मानिकपुरी, उमा साहू, मोना ताम्रकार शहीद अस्पताल, दल्ली राजहरा

मुद्रक - साहू प्रिंटिंग प्रेस, दल्ली राजहरा 9893962999